Appointments

शारीरिक विकलांग बालक
Physically Handicapped Children

शारीरिक विकलांगता कोई अभिशाप नहीं है। यह किसी भी कारण जैसे- आनुवंशिक माता-पिता की अज्ञानता, दुर्घटनाओं अथवा कभी-कभी प्राकृतिक आपदाओं के कारण हो जाती है। विकलांगताओं के कारण कभी-कभी इनकी सामाजिक एवं मानसिक आधारों में अन्तर आ जाते हैं।

"विकलांगता एक ऐसी स्थिति है जो किसी भी व्यक्ति को किसी भी अवस्था में उसके सामान्य व्यवहार, कार्यशक्ति, विचार एवं नियमित कृत्य को न्यूनाधिक प्रभावित कर आंशिक, मानसिक, सामाजिक व भावात्मक असन्तुलन उत्पन्न कर देती है।"

बालगोविन्द तिवारी के अनुसार -

"विकलांगता एक असन्तुलन की स्थिति है जो कि व्यक्ति विशेष के व्यवहार को प्रभावित कर उसको सामान्य व्यक्ति से अलग करती है।"

सेमुअल ए. किर्क के अनुसार विभिन्न विकलांग बालकों को तीन श्रेणियां बताई है।

Appointments

(1) : मानसिक विकलांग (Mentally Handicapped)

(2) : सामाजिक रूप से कुसमायोजित (Socially-Maladjusted)

(3) शारीरिक विकलांग (Physically Handicapped)

में विभक्त किया जा सकता है। लेकिन इस अध्याय में हमारा उद्देश्य शारीरिक रूप से विकलांग बालकों के विभिन्न पक्षों का अध्ययन करना है।

शारीरिक विकलांगता (Physically Handicapped)

शारीरिक विकलांगता किसी बालक की उस अवस्था को दर्शाती है जिसमें किसी भी प्रकार की शारीरिक नियोग्यताओं के कारण वह औसत बालक की भाँति स्कूल के कार्यकलापों में विशेष उन्नति नहीं कर पाता है।

इन शारीरिक नियोग्यताओं की विशेषता को नियंत्रित करने के लिए इन बालकों को अतिरिक्त सहायता (उपकरण) व विशिष्ट शिक्षा की आवश्यकता होती है।

Exp. चक्षु अन्धता (Blindness), मूक बधिरता (Deaf and dumb) और

Scanned with CamScanner

05 October Saturday WK 40
Day 278-087 2019

Appointments

अंग - भंगता (Crippledness) आदि शारीरिक निर्योग्यताएं शारीरिक विकलांगता का मुख्य कारण होती है।

इसके अलावा शारीरिक विकृति (Physically deformity) व अस्वस्थता (Ill-health) के कारण उत्पन्न विकलांगता भी इसी वर्ग में आती है।

शारीरिक विकलांगता में बालक का कोई अंग या तन्त्र विशेष को साधारण उपकरणों की सहायता से कुछ सीमा तक कार्य - सक्षम बनाया जा सकता है। असाधारण रूप से शारीरिक विकलांगता के बालकों जैसे - (नेत्रहीनों) को विशेष शिक्षण या अलग व्यवस्था देनी आवश्यक होती है।

किसी भी बालक में शारीरिक विकलांगता का क्या कारण है? इस दिशा में अध्ययन की रूप रेखा बनाते समय कारणों को मूलतः दो भागों में बांटा जा सकता है

(1) जन्म के साथ शारीरिक विकलांगता
(2) जन्म के बाद शारीरिक विकलांगता

① जन्म के साथ शारीरिक विकलांगता

जन्म के साथ शारीरिक विकलांगता (Congenital Anomalies) यदि उपलब्ध आंकड़ों के आधार पर 3% हीं जीवित बालकों की संख्या बतायी गयी है लेकिन ये असामान्यताएँ बच्चों के मानसिक धरातल को पूरी तरह से नष्ट अथवा अव्यवस्थित कर देती है। इन असमान्यताओं के प्रमुख रूप से गुणसूत्रों का असामान्य संयोग और गर्भावस्था में माँ का शरीर पर दवाओं, x किरणें और अन्य जीवाणुओं जैसे - चेचक तथा वर्तमान में अति संवेदनशील (Aids virus) (HIV+ve) शारीरिक विकलांगता उत्पन्न करने में सहायक सिद्ध होती है।

इस तरह के बच्चों को टीरैटोजेन्स कहा जाता है।

इस स्थिति में माँ के संक्रमित होने का विशेष प्रभाव परिलक्षित होता है। इन संक्रमणों से मूलतः जिन शारीरिक विकलांगताओं को देखने को मिलता है।

Exp: पैरों का आकार अति छोटा होना अथवा कभी-कभी न होना। इस प्रकार के बच्चों को फोकोमेलियां (Phocomelia) कहा जाता है।

गर्भधान के समय माँ का शराब एवं अन्य नशीले पदार्थों का सेवन मुख्य रूप से बच्चों में मानसिक विकलांगता, मस्तिष्क क्षतिग्रस्तता (Brain damage) अति क्रियाशीलता (Hyperactivity) के साथ शारीरिक विकलांगता जैसे - चेहरे की असामान्य बनावट एवं यष्टि में असामान्यता

जन्म के बाद शारीरिक विकलांगता

जन्म के बाद शारीरिक विकलांगता को अर्जित शारीरिक दुर्घटना (विकलांगता) के अन्तर्गत रखा जाता है। यह विकलांगता किसी दुर्घटना, प्राकृतिक आपदाओं और कभी-कभी माता-पिता के अज्ञानता के कारण हो जाती है। इन विकलांगताओं में प्रमुखतः शरीर के किसी भाग में अपंगता (दुर्घटना के कारण) पोलियो अन्धापन (माँ बाप द्वारा विटामिन 'ए') से युक्त खाद्य पदार्थों को उपलब्ध न कराना, अति शोरगुल वातावरण के साथ (कारण) श्रवण क्षमता का ह्रास होना आदि।